भक्ति पूरी हुई, सच्चा ज्ञान मिला

• ब्रह्माकुमार शिवकान्त मिश्रा, कोटकपूरा (पंजाब)

मेरा लौकिक जन्म धार्मिक ब्राह्मण परिवार में हुआ। छोटी आयु में ही मेरी भक्ति आरंभ हो गई थी। देशी घी की ज्योति जलाकर, हाथ जोड़कर उसको निहारना अच्छा लगता था। उमर बढ़ने के साथ-साथ भक्ति भी बढ़ती गई। एलर्जी की बीमारी के कारण बचपन से ही मेरी आँखें लाल रहती, पानी बहता रहता व दुखती रहती थी। एक ज्योतिषी ने मुझे आँखों को ठीक करने के लिए सवा लाख गायत्री मंत्र जपने को कहा, जो मैंने सहज स्वीकार कर लिया। आँखें तो ठीक नहीं हुई पर दुर्गा माँ का मैं परमभक्त बन गया। भक्ति करते भी मुझे सच्चे ज्ञान की तलाश थी। भगवान एक है लेकिन कौन? अगर सभी भगवान के ही रूप हैं, तो वो एक कौन है? एक तरफ उसको 'ऊपर वाला' कहते हैं, फिर कण-कण में भी कह देते हैं, ऐसा क्यों? अगर महादेव शंकर सबसे बड़े हैं तो वो खुद समाधि क्यों लगाते हैं? मुझे इन सभी प्रश्नों के उत्तर की तलाश थी।

अंतर्मन रहा प्यासा

बचपन में ही मुझे गहरा एहसास होता था कि इंसानों से पहले, इस धरती पर देवताओं का वास था। सपने में मुझे एक सुन्दर दुनिया भी नज़र आती थी। इस तरह 15 वर्ष की उम्र तक मैंने दिन-रात भक्ति की लेकिन अंतर्मन फिर भी प्रभु-प्रेम का प्यासा ही रहा। सन् 1997 में हमारा परिवार पंजाब में कोटकपूरा शहर में आ गया। यहाँ 10वीं कक्षा में मेरे एक ब्रह्माकुमार सहपाठी ने मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम जाने के लिए कहा। उसने कहा, वहाँ भगवान को याद किया जाता है। मैंने सोचा, शायद किसी अनाथ आश्रम की बात कर रहा होगा, वहाँ कोई प्रार्थना होती होगी, मैंने मना कर दिया।

देवी माँ के दर्शन

सन् 1998 के राखी के त्योहार के दिन सफेद कपड़े पहने वही भाई, तीन और भाइयों के साथ मुझे मिलने आया और कहा, आज तो आपको आश्रम ज़रूर लेकर जायेंगे। मैं उनका मान रखने के लिए, मम्मी से छुट्टी लेकर चल पड़ा। जैसे ही आश्रम के नज़दीक पहुँचा तो ऐसे लगा जैसे कि मेरा शरीर बहुत हल्का हो गया है और जब अपना कदम आश्रम के दरवाजे पर रखा तो शरीर का भान ही खत्म हो गया मानो किसी दूसरे लोक में पहुँच गया हूँ। अंदर देखा कि एक बड़े हाल में सफेद वस्त्र धारण किए फ़रिश्तों जैसी सभा है। सामने देखा तो चैतन्य में अष्टभुजा दुर्गा देवी उन फ़रिश्तों को राखी बाँध रही है। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। फिर मन में संकल्प आया कि मेरी भक्ति से प्रसन्न होकर दुर्गा माँ मुझे साक्षात् दर्शन करा रही

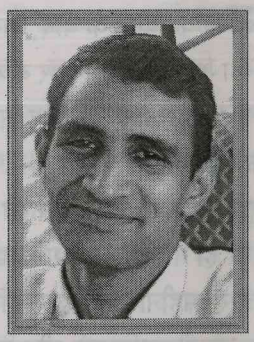

हैं। मैं अपलक उस देवी माँ को निहारता रहा। फिर उस चैतन्य दुर्गा माँ ने मुझे भी राखी बाँधी और वरदानी बोल बोले, 'आप बहुत लक्की आत्मा हो।' ये शब्द जैसे मेरे अंतर्मन में घर कर गये और मुझे अपने भाग्य पर गर्व होने लगा। थोड़ी देर बाद मेरी दृष्टि सामने लगे बाबा के ट्रांसलाइट के चित्र पर पड़ी, ऐसा लगा मानो किसी दिव्य शक्ति ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। मैं ब्रह्मा बाबा की आँखों में आँखें डाल देखता रहा जैसे कि इनके साथ मेरा बहुत जन्मों का गहरा रिश्ता है। फिर एक भाई ने मुझे वहाँ लगी ज्ञान के चित्रों की प्रदर्शनी समझाई, मुझे लगा कि जिस ज्ञान की बचपन से तलाश थी, वो मिल गया, यही तो परमात्मा का सच्चा ज्ञान है। फिर खुशी में नाचता हुआ घर गया और मम्मी को जाकर बताया कि मुझे सच्चा ज्ञान मिल गया है।

अनगिनत फायदे मिले ईश्वरीय ज्ञान से

जिस मोहल्ले में हमने किराये पर